राजनीति विज्ञान का वैज्ञानिक अध्ययन

डॉ. सुनीता त्रिपाठी
प्राध्यापक राजनीति विज्ञान,
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

सामान्यता सभी सामाजिक विज्ञानों और खासकर राजनीति विज्ञान के अध्ययन के लिए वैज्ञानिक पद्धति को अपनाकर अध्ययन किया जा रहा है। द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् परम्परागत राजनीति विज्ञान के विरोध में एक व्यापक क्रान्ति प्रारम्भ हुई जिसने सभी समाज विज्ञानों को प्रभावित किया। इस क्रान्ति को व्यवहारवाद कहा गया। यह व्यवहारवादी क्रान्ति 'नये राजनीति विज्ञान के साथ इतनी अधिक जुड़ी हुई हैं कि इसे ''राजनीति के वैज्ञानिक अध्ययन का सहचर'' माना जाता है। राजनीति विज्ञान शब्द से ही स्पश्ट है कि इस विशय का आधार ''वैज्ञानिक पद्धति'' है। अरस्तू के समय से ही राजनीति विज्ञान में वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन की परम्परा शुरू हुई।

हॉब्स, ऑगस्त काम्टे, हर्बर्ट स्पेन्सर, जॉन स्टुअर्ट मिल, आदि ने किसी न किसी रूप में राजनीति शास्त्र के क्षेत्र में वैज्ञानिक पद्धति के विकास में सहायता की आज राजनीति विज्ञान को वैज्ञानिक अनुशासन बनाने में हेरल्ड लॉसवेल डेविड ईस्टन, आमण्ड, डायच आदि राजनीति शास्त्रियों का योगदान रहा है। राजनीति शास्त्र के वैज्ञानिक अध्ययन के लिए वैज्ञानिक पद्धतियों का प्रयोग शोधकर्ता को अपने अध्ययन हेतु करना होता है। वैज्ञानिक पद्धति के मुख्य चरण ये हैं- (1) पर्यवेक्षण (2) क्रमबद्ध (3) मापन (4) तथ्यों का निरीक्षण आलेखन (5) तथ्यों का वर्गीकरण (6) स्वीकृति या अस्वीकृति (7) सामान्यीकरण (8) व्याख्या (9) तार्किक निगमात्मक युक्तिकरण (10) परीक्षण या जाँच (11) संशोधन (12) पूर्व कथन (भविश्य कथन) (13) अस्वीकृति

आधुनिक युग में राजनीति विज्ञान के अध्ययन के लिए नये-नये वैज्ञानिक तरीकों को अपनाया जा रहा है। अमेरिका में शोध विधि विज्ञान पर्याप्त विकसित हो चुका है- राजनीति विज्ञान के वैज्ञानिक अध्ययन हेतु जो नए-नए तरीके अपनाए जा रहे हैं उनमें प्रमुख तरीके ये हैं- (1) सर्वेक्षण प्रणाली (2) केस प्रणाली (3) प्रश्नावली (4) साक्षात्कार प्रणाली (5) सोशियोमेट्री (6) जनमत मतदान (7) अंकशास्त्रीय प्रणाली।

राजनीति विज्ञान को प्राकृति विज्ञानों की संज्ञा नहीं दी जा सकती। प्राकृति विज्ञानों की तरह इसके निश्कर्श ठोस और सही नहीं हो सकते क्योंकि राजनीति विज्ञान में वैज्ञानिक पद्धति को अपनाने के मार्ग में कुछ कठिनाईयां है। (1) माप समस्या (2) पूर्वाग्रह (3) सामाजिक जीवन की जटिलता (4) प्रयोग में असामर्थ्यता (5) भविश्यवाणी की क्षमता का अभाव।

आधुनिक युग में राजनीति विज्ञान के अध्ययन के लिए नए-नए वैज्ञानिक तरीकों को अपनाया जा रहा है। अमेरिका में ''शोध विधि विज्ञान'' पर्याप्त विकसित हो चुका है और वैज्ञानिक अध्ययन के नए-नए तरीकों को

राजनीति विज्ञान के अध्ययन के लिए अपनाया जा रहा है। इनमें ये तरीके प्रमुख है - सर्वेक्षण प्रणाली, केस प्रणाली, प्रश्नावली प्रणाली, साक्षात्कार प्रणाली, सोशियोमेट्री प्रणाली, जनमत मतदान तथा अंक शास्त्रीय प्रणाली आदि।

सर्वेक्षण प्रणाली के अन्तर्गत किसी क्षेत्र के निवासियों के बारे में अध्ययन से सम्बन्धित विषय पर का संग्रह किया जाता है तथा उनसे निश्कर्श निकाला जाता है। केस प्रणाली के अन्तर्गत अध्ययन की इकाई और सीमित होती है लेकिन उसके प्रत्येक पक्ष का काफी विस्तृत और गहरा अध्ययन किया जाता है। प्रश्नावली के अन्तर्गत अध्ययन की इकाईयों को कुछ प्रश्नों का उत्तर देने के लिए कहा जाता है और उन दिए गए उत्तरों के आधार पर निश्कर्श निकालें जाते हैं साक्षात्कार प्रणाली के अन्तर्गत सम्बन्धित व्यक्तियों का साक्षात्कार किया जाता है। ''सोशियों मैट्रिक'' प्रणाली का प्रयोग किसी समुदाय के व्यक्तियों के बीच पारस्परिक तनावों और खिंचाव का अध्ययन करने के लिए किया जाता है। 'जनमत मतदान' का प्रयोग किसी समस्या पर जनता के विचारों, भावनाओं, दृश्टिकोण को जानने के लिए किया जाता है और अंकशास्त्रीय प्रणाली में आंकड़ों के आधार पर निश्कर्श निकाले जाते हैं।

समाज विज्ञानों में वैज्ञानिक पद्धति में अध्ययन करने वाले विद्यार्थी के सम्मुख समाज भौतिक विश्व की अपेक्षा बहुत अधिक जटिल सामग्री प्रस्तुत करता है। इसीलिए एल्वर्ट आइन्स्टीन कहते हैं- राजनीति वस्तुतः भौतिकी की तुलना में वहुत कठिन है।' इसी कारण समाज विज्ञानों द्वारा खोजे गए नियम वहुत थोड़े हैं तथा जो नियम है उनकी भी सत्यता परिस्थितियों पर निर्भर करती है। मोस्का की शासक वर्ग सम्बन्धी धारणा कि ''वृहत्तर समाज में लघुत्तर शासक वर्ग होगा'' अथवा रावर्ट मिचैल्स की ''अल्पतंत्रीय लोह विधि'' राजनीतिक व्यवहार की कोई निश्चित विधि ा नहीं है। राजनीति विज्ञान में अब तक धारणाएं और प्रवृत्ति तो देखी गई है पर पूर्वकथनीयता एवं नियंत्रण की क्षमता से युक्त सिद्धांत या विधियां नहीं है। फिर भी राजनीति विज्ञान में सिद्धान्तों की रचना और शोध कार्यों को सम्पन्न करने के क्षेत्र में भी कुछ प्रयास हुए है। मानवीय समाज का दीर्घकालीन अनुभव इस वात को स्पश्ट करता है कि मानवीय प्रवृत्तियों में कुछ निरन्तरताएं होती हैं जिनके आधार पर सामान्य नियमों का निर्माण किया जा सकता है जैसे मान्टेस्क्यू की परिकल्पना थी कि जिनके पास असीमित अबाधित राजनीतिक शक्ति होती है वे इसका दुरूपयोग कर जनता पर अत्याचार करने लगते हैं तथा अपने स्वार्थों की पूर्ति करते हैं। राजनीति विज्ञान के इस सर्वमान्य नियम के आधार पर संयुक्त राज्य अमेरिका के संविधान में शक्तिपृथक्करण तथा नियत्रंण सन्तुलन के सिद्धान्त को अपनाया गया है। शासक वर्ग पर नियंत्रण आततीयतंत्र के विरूद्ध सुरक्षा प्रदान करता है।

सेमर मार्टिन लिपसेट ने लैटिन अमेरिकी, यूरोपीय एवं एशियाई प्रजातंत्रों का अध्ययन करते हुए परिकल्पना को प्रमाणित किया कि 'आर्थिक विकास प्रजातंत्र की पूर्व आवश्यकता है तथा आर्थिक दृश्टि से कम प्रजातंत्रों की अपेक्षा अधिक अच्छे होते है।''

इसी प्रकार राजनीति विज्ञान में भविश्य में होने वाली घटनाओं या परिवर्तनों के बारे में जो पूर्व कथन जाते हैं उनके द्वारा शासन प्रशासन सचेत होकर इन धटनाओं या क्रान्तियों से वचने के सुरक्षा उपाय पूर्व से ही अ लेता है। यदि राजनीति विज्ञान की भविश्यताणियां कभी गलत भी हो गई तो उससे कोई विशेश फर्क नहीं पड़ता

ऐसे विनाशकारी घटना चक्रों की रोकथाम की दिशा में चिन्तन-मनन तो किया गया जो भविश्य में मदरगार होगा। आजकल राजनीति विज्ञान के अन्तर्गत सिद्धान्तों की रचना करते समय ''मॉडलों'' का भी प्रयोग होता है तथा अनेक सिद्धान्त भी स्थापित हो चुके हैं यथा अन्तर्राश्ट्रीय सम्बन्धों के सिद्धान्त, निर्णय लेने के सिद्धान्त मतदान व्यवहार के सिद्धान्त संयुक्त सरकार गठन सम्बन्धी सिद्धान्त आदि सिद्धान्तों की रचना के लिए कई उपागम (दृश्टिकोण) विकसित किए गए जैसे संरचनात्मक एवं कार्यात्मक दृश्टिकोण।

वैज्ञानिक पद्धति के निम्न चरण होते हैं :-

(1) पर्यवेक्षण (2) वर्णन (3) मापन (4) स्वीकृति या अस्वीकृति (5) सामान्यीकरण (6) व्याख्या (7) तार्किक निग मनात्मक युक्तिकरण (8) परीक्षण (9) संशोधन (10) पूर्व कथन (11) अस्वीकृति (12) मूल्य निरपेक्ष दृश्टिकोण जो सामाजिक विज्ञानों में पूर्णतः नहीं अपनाया जा सकता है।

राजनीति विज्ञान में ''वैज्ञानिक'' विधाएं अपनाने के लिए समय-समय पर अनेक दृश्टिकोण प्रतिपादित किए गए जिनमें मोटे तौर पर दो दृश्टिकोण प्रमुख है- (1) विधिवादी अथवा आदर्शात्मक दृश्टिकोण (2) वैज्ञानिक व्यवहारवादी दृश्टिकोण अथवा आनुभाविक विश्लेशणात्मक दृश्टिकोण।

प्रथम दृश्टिकोण अर्थात् आदर्शात्मक दृश्टिकोण तथ्यों की अपेक्षा मूल्यों पर जोर देता है। यह परम्परावादी विचार है जो किसी न किसी रूप में मूल्यों-आदर्शों, नैतिकताओं को प्रधानता देते हैं। प्लेटो-अरस्तू से लेकर मार्क्स और लास्की तक अधिकांश राजनीति शास्त्रियों पर उनके अपने दर्शन और मूल्यों का प्रभाव पड़ा है। ये 'मूल्य' सदैव विश्वास आस्था, श्रद्धा, आन्तरिक प्रेरणा आदि स्त्रोंतो पर आधारित होते हैं।

सुकरात, प्लेटों, अरस्तू जैसे मनीशियों ने इस धारणा का प्रतिपादन किया था, कि 'मनुष्य एक नैतिक प्राणी है और उसका नैतिक विकास राज्य में ही संभाव है तब से लेकर 20 वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक राजनीति विज्ञान और नीति शास्त्र घनिश्ठ समबद्ध रहे। इस समय ऐसे प्रश्नों पर चिन्तन होता रहा- राज्य सरकार का क्या उद्देश्य होना चाहिए? क्या लक्ष्य होना चाहिए? इन उद्देश्यों और लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कौन से साधन अपनाने चाहिए? ''आदर्ष राज्य'' कैसा होना चाहिए? समानता, स्वतंत्रता, संप्रभुता एवं कानून आदि का नैतिक औचित्य क्या हो? नैतिकता के चलते इस काल में वैज्ञानिक विधियों का सहारा शोधकर्ताओं और विचारकों द्वारा कर लिया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

(1) डॉ. रजनी कोठारी राजनीति कल और आज वाणी प्रकाषन नयी दिल्ली 2005

(2) सैनी मयूरी एवं सेन जय नयी राजनीति प्रकाषन संस्थान नयी दिल्ली

(3) योजना पत्रिका 2000/-

(4) रोमी पर्मा नई दिषायें प्रकाषन विभाग

(5) डॉ. इति तिवारी आधुनिकीकरण यूनिवर्सिटी पबलिकेषन नई दिल्ली